कृण्वन्तो विश्वमार्यम् यतेमहि स्वराज्ये
website : www.pramanaresearchjournal.com ISSN : 2249-2976
Impact Factor : 4.005

Pramāna
Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241
(Peer Reviewed)

Year : 8
Issue : 31(iii)
Jan-March 2019
www.pramanaresearchjournal.com

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

Pramāna
International Refereed

UGC Approved No. 41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal **(ISSN : 2249-2976)**
Year-8, Issue-31(iii) (Jan.-March 2019) (Page No. 163-167)

पर्यावरण और नेपाली का काव्य

डॉ० दिवाकर चौधरी
नेट–जे.आर.एफ हिन्दी
बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय

शोध–आलेख सार

नेपाली का काव्य प्रकृति के सहज सौन्दर्य का काव्य है। प्रकृति के प्रति उसमें गहरी आत्यमीयता है और बहुत हद तक अभिन्नता भी । पीपल, पंछी, घास, सरिता, मौलसिरी, बेर को काव्यात्मक गरिमा देने में नेपाली बेजोड़ हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए किये जा रहे प्रयत्नो को कवि की प्रकृतिपरक कविताओं से प्रेरणा मिल सकती है। इसलिए इनकी प्रासंगिकता असंदिग्ध है।" प्रकृति का मानव – जीवन में अमूल्य योग रहा है – सृष्टि के आम्भ से ही। प्रकृति जीवन और साहित्य का प्रमुख उपादान रही है। नेपाली प्रकृति को नैसर्गिक सौन्दर्य का भंडार मानते हैं। साथ ही उनकी मान्यता है कि जगत के संपूर्ण कोलाहल, मनुष्य की संपूर्ण यांत्रिक यातना से मुक्ति का मार्ग प्रेम और सौन्दर्य ही दे सकते हैं और प्रकृति नैसर्गिक सौन्दर्यपूरीत होने के कारन इसका एक महत्वपूर्ण उपादान है। नैसर्गिक छवियों के दर्शन मात्र से शरीर को स्फूर्ति और मानसिक पोषन प्राप्त होता है। नेपाली का प्रथम काव्य –संग्रह है।उमंग' ।

मुख्य–शब्द : जनगीत, पर्यावरण संरक्षण, आत्यमीयता ।

गोपाल सिंह 'नेपाली' उत्तर छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। वे प्रेम, प्रकृति और राष्ट्रीयता की गीतिकाव्यधारा के विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। इन्होंने आलोचकीय साहित्यिकता से पृथक जनगीत – धारा का साहित्यिक रूप अपनाया । उनका काव्य जीवन के सहज सौन्दर्य–बोध का काव्य है और उनके सौन्दर्य– बोध की सर्वाधिक जीवंत प्रस्तुति उनके प्रकृति –काव्य में मिलती है। उनकी प्रकृतिपरक कविताओं में उनका प्रकृति के प्रति सहज और स्वभाविक अनुराग प्रकट हुआ है। उनकी काव्य संवेदना के मूल में प्रेम और प्रकृति है। उनके सम्बन्ध में यह सच ही कहा गया है कि – ''नेपाली का काव्य प्रकृति के सहज सौन्दर्य का काव्य है। प्रकृति के प्रति उसमें गहरी आत्मीयता है और बहुत हद तक अभिन्नता भी । पीपल, पंछी, घास, सरिता, मौलसिरी, बेर को काव्यात्मक गरिमा देने में नेपाली बेजोड़ हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए किये जा रहे प्रयत्नो को कवि की प्रकृतिपरक कविताओं से प्रेरणा मिल सकती है। इसलिए इनकी प्रासंगिकता असंदिग्ध है।''[1] प्रकृति का मानव – जीवन में अमूल्य योग रहा है – सृष्टि के आरम्भ से ही। प्रकृति जीवन और साहित्य का प्रमुख उपादान रही है। नेपाली प्रकृति को नैसर्गिक सौन्दर्य का भंडार मानते हैं। साथ ही उनकी मान्यता है कि जगत के संपूर्ण कोलाहल, मनुष्य की संपूर्ण यांत्रिक यातना से मुक्ति का मार्ग प्रेम और सौन्दर्य ही दे सकते हैं और प्रकृति नैसर्गिक सौन्दर्यपूरीत होने के कारन इसका एक महत्वपूर्ण उपादान है ।नैसर्गिक छवियों के दर्शन मात्र से शरीर को स्फूर्ति और मानसिक पौषण प्राप्त होता है। नेपाली का प्रथम काव्य –संग्रह है उमंग' । 'उमंग' की एक कविता में इन्होंने इस ओर संकेत करते हुए स्वयं लिखा है कि

''जीवन में क्षण -क्षण कोलाहल,
ज्यों सुख त्यों दुखः, सुख-दुःख समान
आती संध्या जाता विहान, जाती संध्या आता विहान
इसलिए जगत में दो ही तो कुछ ७ांति कभी देनेवाले
है एक प्रकृति की मृदुल गोद, दुसरा प्रेम का मधुर गान ''।।[2]

नेपाली प्रकृति के संपूर्ण कवि हैं । प्रकृति उनके काव्य की प्रेरणा-भूमि है। कविवर सुमित्रानंदन पंत ने 'उमंग' की भूमिका में इस ओर संकेत करते हुए लिखा है कि-''आपका कवि-कंठ; निर्मल निर्झर के समान; अवश्य ही मंसूरी की तलहटी में फूटा होगा । इसलिए आपकी रचनाओं में जो उन्मुक्त वतावरण एवं स्निग्ध अनिलाताप मिलता है, वह पाठक हृदय की खिड़की खोलकर; 'नरम दूब' बिछी राहों से; विलास की मंसूरी'से 'जंगल की मंसुरी' में ले जाकर , प्रकृति की मनोरम क्रीड़ा -भूमि में छोड़ देता है , जहाँ जंगल की हरियाली अंचल पसार' कर उसका स्वागत करती है। 'जामुन तमाल इमली करील, ऊपर विस्तृत नभ नील-नील; ऊँचे टीले; गिलहरियों के घर' मन को मोहते हैं। 'पीले-पीले लाल-लाल, फल-फुल मुकुल से लदी डाल' में 'मधुप गुनगुन; फुलचुग्गी रूनझुन' करती; बुलबुल- सुग्गे चुन-चुन' फल खाते हैं । जहाँ 'द्रुम में दाड़िम गोल-गोल; सेब, किशमिश, अनार से भी मीठे देहरादून के मधुर बेर खाने को मिलते हैं। जहां झीलों में जल, जल में मृणाल हैं । घर बसाने की प्रतीक्षा में डालों पर बैठे पक्षियों के जोड़े 'चोंचों से पर सुहला-सुहलाकर', प्रेम विह्वल हो कल-कूज करते हैं''।[3] स्वयं कवि के ७ाब्द हैं-''यह हरी- हरी दूब की ही महिमा है कि आाज मेरे हाथ में बंदूक के बदले लेखनी है।''[4] इतना ही नही प्रकृति ने ही नेपालीजी को कविताई सिखाई है-

''फूटा है मेरा कण्ठ यहीं रे
निर्मल-निर्झर के समान
सिखा है मैंने यहीं तीर पर सरिता
के मृदु सरल गााान
सिखलाया है यहीं मुझे नित पंछी ने
उड़ना पाँख खोल
है हुआ यहीं क्रीडा, निकुंज में मेरे जीवन का विहान ।।''[5]

नेपाली की प्रकृति विषयक कविताओं में पर्यावरण - संरक्षण की रचनात्मक पहल मिलती है । 'पंछी; 'पीपल; हरी घास; 'सरिता' जैसी प्रकृति-कविताओं में प्रकृति का महज सौन्दर्य ही नही है, उसके महत्त्व का रेखांकन भी है। 'पंछी' को संबोधित करते हुए कवि कहता है-

''रे पंछी, मंजुल बोल बोल
सुख मना मोद से कर किलोल
पक रहे सरस मंजुल रसाल
पीले-पीले, लाल-लाल फल-फुल
मुकुल से लदी डाल झीलों में
जल, जल में मृणाल
द्रुम में ये दाड़िम गोल-गोल
रे पंछी मंजुल बोल बोल, ।''[6]

नेपाली की कविताएँ प्रकृति के साथ गहरे तदात्म्य की कविताएँ है । उनमें प्रकृति के प्रति गहरी आत्मीयता अभिव्यक्त है । वे छायावादी कवियों की तरह 'गुलाब; 'चमेली; 'जूही के सौन्दर्य से अभिभुत, नहीं हैं, बल्कि लोकजीवन को संरक्षण और पोषण देनेवाले प्राकृतिक तत्वों की ओर उन्मुख हैं ।इसलिए कवि को

'जूही की कली, की अपेक्षा 'पीपल' और 'बेर' ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगते हैं । 'पीपल' का भारतीय सभ्यता -संस्कृति में विशेष महत्त्व है । 'पीपल' के स्नेहिल स्वभाव का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है-

''पीपल के पत्ते गोल-गोल
कुछ कहते रहते डोल-डोल
जब-जब आता पंछी तरू पर,
जब-जब जाता पंछी उड़कर
जब-जब खाता फल चुन-चुनकर
पड़ती जब पावस की फुहार,
बजते जब पंछी के सितार
बहने लगती शीतल बयार
तब -तब कोमल पल्लव हिल-डुल,
गाते सर्सर, मर्मर मंजुल
लख-लख, सुन-सुन विह्वल
बुलबुल गाती रहती चह-चह,
सरिता गाती रहती बह-बह
पत्ते हिलते रहते रह-रह ।।''[7]

'पीपल' भारतीय सभ्यता-संस्कृति का प्रतीक वृक्ष है। इसमें हमारी आस्था की नमी और संकल्प की दृढ़ता है। कवि ने पीपल के सहज सौन्दर्य को साकार कर दिया है-

''कानन का यह तरूवर पीपल
युग-युग से जग में अचल, अटल
ऊपर विस्तृत नभ नील-नील,
नीचे वसुधा में नदी, झील
जामुन, तमाल, इमली, करील
जल से ऊपर उठता मृणाल
फुनगी पर खिलता कमल लाल
तिर-तिर करते क्रीड़ा मराल
ऊँचे टीले से वसुधा पर,
झरती है निर्झरिणी झर-झर
हो जाती बूँद-बूँद झरकर
निर्झर के पास खड़ा पीपल
सुनता रहता कलकल- छलछल
पल्लव हिलते रहते ढलपल-ढलपल।।''[8]

इसी प्रकार देहरादून के मधुर 'बेर' की प्रशंसा कवि कुछ ऐसे करता है -

''देहरादून के मधुर बेर
जंगल में मिलते ढेर-ढेर
जब आता है रे ७रद काल
लदती बेरों से डाल-डाल
लख पीले-पीले लाल-लाल ,

हो जाती मंसूरी निहाल,
थकते न नयन ये हेर-हेर
देहरादून के मधुर बेर ।।"[9]

और मातृवत्सला 'सरिता' के सौन्दर्य को इन शब्दों में चित्रित किया है -

"यह लघु सरिता का बहता जल
कितना ७ीतल, कितना निर्मल
हिम के पत्थर वे पिघल-पिघल
बन गए धारा के वारि विमल
सुख पाता जिससे पथिक विकल
पी-पीकर अंजलि भर मृदु जल
नित जलकर भी कितना शीतल
यह लघु सरिता का बहता जल
कितना कोमल, कितना वत्सल
रे जननी का वह अन्तस्तल
जिसका यह शीतल करूणा जल
बहता रहता युग-युग अविरल
गंगा, यमुना, सरयू निर्मल
यह लघु सरिता का बहता जल।।"[10]

नेपाली की प्रकृतिप्रियता उनके परवर्ती काव्य-संग्रहो में और परिष्कृत और सघन होती गई है । पर्यावरण-संरक्षण के इस दौर में नेपालीजी की कविताएँ प्रकृति के महत्त्व को, उसकी स्वाभाविक सुषमा को सहजता से उजागर कर हमारे मन में प्रकृति के प्रति लगाव उत्पन्न करती हैं । नेपालीजी के काव्य में प्रकृति जीवन की अगन और थकन दोनो दूर करती है -

"झरो-झरो ऐ निर्मल झरने, छलक पड़ो वन में छलछल
फूटो-फूटो अब वसूधा से, छलक पड़ो वन में झलझल
मैं भी पी पाऊँ जीवन में एक घूँट झरने का जल
थकन दूर हो जीवन भर की, मन तुझ-सा ही ७ीतल ।।"[11]

'कुसुमवन का सौन्दर्य अभिभूत कर देता है। उसकी अद्‌वितीय सुषमा मंत्रमुग्ध कर देती है-

"सरिता के उस पार कुसुम-वन सुन्दर फूल रहा था,
जहाँ पहुँच सौन्दर्य विश्व का निज पथ भूल रहा था
डाल-डाल पर कुसुम मनोहर हँस-हँस झूल रहा था,
अपने नवयौवन के आगे जग को भूल रहा था।
तरह-तरह के सुमन खिले थे फूट रही थी कलियाँ,
गम-गम गमक रही थीं सौरभ-सुरभित वन की कलियाँ,
सुमन कपोलों पर मधुपों की होती थीं रँगरलियाँ,
मानो वहाँ किसी ने रख दी थीं मिश्री की डलियाँ!
भौरों की मृदु गुंजारों से वन था मुखरित होता,
इधर-उधर बहता था चंचल निर्मल जल का सोता;
जो कोई आता मोहित होता, अपनी सुध-बुध खोता,

कहीं गा रही मंजुल मैना, कहीं बोलता तोता ।।"[12]

नेपाली यह स्पष्ट मानते हैं कि प्रकृति से विलगाव न केवल नैसर्गिक सौन्दर्य से विलगाव है, बल्कि विनाश का आमंत्रण भी है । उनकी प्रकृति विषयक कविताएँ प्रकृति के प्रति एक स्वाभाविक लगाव उत्पन्न करती है । प्रकृति की सुरक्षा मानव के अस्तित्व की सुरक्षा से सम्बद्ध है। प्रकृति ही पर्यावरण को संतुलित कर सकती है। हरे वृक्ष, कलकल करती बहती नदियाँ, दृढ़ता से सीना ताने पर्वत, कलरव करते पंछी जहाँ एक ओर धरती के अवसाद को कम करते हैं, अवसाद के बीच उल्लास का संगीत मुखरित करते हैं वहीं दूसरी ओर पर्यावरण-संरक्षण के लिए हमें उत्प्रेरित भी करते हैं। नेपाली की प्रकृति-विषयक कविताओं में कल्पना की वायवीयता कम, जीवन का यथार्थ अधिक है और इस यथार्थ का एक स्वर पर्यावरण-संरक्षण का भी है। नेपाली की अधिकांश कविताएँ पर्यावरण-संरक्षण के लिए जनमत का निर्माण करती हुई प्रतीत होती है। यह नेपाली की विशिष्टता भी है और आज के सन्दर्भ में उनकी प्रासंगिकता भी।

संदर्भ

1. राय सतीश कुमार संपादक, नेपाली : चिन्तन -अनुचिन्तन , प्रथम संस्करन , 2009, समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर नई दिल्ली, पृ॰ -9
2. उमंग, कविता : नौका -विहार, नंदन नंदकिशोर , संपादक, राजदीप, प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2011, पृ॰ 66
3. पंत सुमित्रा नंदन, स्नेह-शब्द, उमंग, संपादक, नंदन नंदकिशोर, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन : 2011, पृ॰ 7
4. नेपाली गोपाल सिंह, स्वर -संसाधन, रागनी, संपादक, नंदन नंदकिशोर, राजदीप, प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन :2011, पृ. 5
5. उमंग, कविता : मंसूरी की तलहटी, नंदन नंदकिशोर, संपादक, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन :2011 पृ. 61
6. उमंग, कविता पंछी, नंदन नंदकिशोर, संपादक, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन :2011, पृ. 40
7. उमंग, कविता :पीपल, नंदन नंदकिशोर, संपादक, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन :2011, पृ. 53
8. उमंग, कविता :पीपल, नंदन नंदकिशोर, संपादक, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन :2011, पृ. 53
9. उमंग, कविता :बेर, नंदन नंदकिशोर, संपादक, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन :2011, पृ. 62
10. उमंग, कविता :सरिता, नंदन नंदकिशोर, संपादक, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करन :2011, पृ. 58-59
11. उमंग, कविता :पेम, नंदन नंदकिशोर, संपादक, राजदीप प्रकाशन, नई दिल्ली , संस्करन :2011, पृ.27
12. पंछी, पहला पंख (2, वनराज), नंदन नंदकिशोर, संपादक, पुस्तक भवन, नई दिल्ली, संस्करण : 2011, पृ.21